International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मैला आँचल का राजनीतिक महत्त्व

Mohd Shawan Khan

PGT Teacher, Harvest International School

सारांश

मैला आँचल उपन्यास को किसी एक फ्रेम में रखकर नहीं देखा जा सकता है, यह एक बहुआयामी और कालजयी कृति हैं। इसमें आंचलिकता, सामाजिक जीवन, ग्रामीण परिवेश में रिश्तों की बुनावट तथा सामाजिक ढांचा सब को बड़ी बारीकी से एक चित्रकार की भाँति चित्रित किया गया। उपन्यास जितना भाषाई सौंदर्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, उतना ही सामाजिकता, आर्थिक परिवेश, आंचलिकता तथा राजनीतिक बिंदु से भी है। राजनीतिक दृष्टि से इसका महत्त्व इसलिए भी है कि इसमें तत्कालिक राजनीति के साथ ही वर्तमान की प्रतिध्वनि स्फुटित होती है। समय के साथ राजनीति ने जहाँ करवट ली, वहीं साहित्य भी उसके सामने आइना लेकर सामने खड़ा मिला।

उपन्यास में दलबदल राजनीति, बदले की राजनीति विरोधियों को कुचलना और राजनीति में धर्म तथा जातीयता को दिखाया है। मोहभंग का नारा देकर समाजवादी दलों ने जनता को वर्गसंघर्ष की राह पर लाकर तो खड़ा कर दिया परन्तु उनके पास अपनी कार्यशैली का न कोई खाका था और न ही किसी प्रकार की क्रांति या संघर्ष का ही अनुभव ही था। सामंतो और शोषकों के विरुद्ध ऐसे लोग नेतृत्व कर रहे थे जो व्यवस्था से ज्यादा व्यक्ति-विरोधी थे और वैचारिक रूप से परिपक्क्व भी नहीं थे। साथ ही उपन्यास में पल्टूवाद की राजनीति है, जहाँ तहसीलदार जैसे लोगों ने अंग्रेजी हुकूमत में भी मज़े मारे और आज़ादी के बाद खद्दरधारी बनकर सत्ता का सुख भोग रहें हैं। पल्टूवादी राजनीति का सम्बन्ध आज भी बिहार राज्य से है। रेणु ने इस उपन्यास में तत्ल्कालिक बिहार की राजनीति के साथ ही भविष्य की वीभत्स राजनीति को भी दर्शा दिया है।

मूलशब्द: आंचलिकता, साहित्य, राजनीति, मोहभंग, मार्क्सवाद, समाजवाद, वर्ग-संघर्ष

प्रस्तावना

हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासों पर जब कभी बात होती है तो उसमें 'मैला आँचल' का नाम लेना लाज़मी हो जाता है। इसका कारण केवल इतना नहीं है कि इस उपन्यास को आधार बनाकर आँचलिकता के नियम तय किए गए, बल्कि इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इस उपन्यास का आँचलिकता, आधुनिकता,

मनोवैज्ञानिकता, वर्ग-संघर्ष, स्त्री-विमर्श तथा भाषायी विशेषता के आधार पर मूल्यांकन कर सकते हैं। इसकी यह विस्तृत भाव-भूमि इसे श्रेष्ठ रचना होना सिद्ध करती है। राजनीतिक दृष्टि से देखे तो इस उपन्यास के विभिन्न पहलू हमें नज़र आते हैं।

हिंदी कथा साहित्य में शायद ही कोई उपन्यास होगा, जिसका राजनीति से कोई सरोकार न हो। अगर कोई ऐसा उन्यास है तो समझो कि उसमें अपने समय का बोध नहीं- "आज का सर्जनात्मक साहित्य राजनीति से बचकर चलने का दम्भ करे तो वह या तो झूठ सिद्ध होगा या घातक।"[1] फिर 'मैला आँचल' जैसी अमर रचना इससे कैसे बच सकती है? इस उपन्यास में बिहार प्रान्त के मेरीगंज गाँव को ही केन्द्र में रखा गया है। 1942 के बाद अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी में मस्त इस गाँव में सभी पार्टियाँ अपना सिक्का जमाने की कोशिश करतीं हैं। गाँव में सबसे पहले कांग्रेसी नेता बालदेव आता है और कांग्रेस का प्रचार करता है- "ऐसे ही सभी वरकर अपन फील्ड में वर्क करें तब तो? दो महीने में इतने गाँव को अकेले ही आरगेनाइज कर लिया है। चवन्निया मेंबर कितना बनाया है? पाँच सौ? तब तो तुम..... आप जिला कमिटी के मेंबर हो गये।"[2] कांग्रेस के बाद सोशलिस्ट पार्टी भी मेरीगंज को अपनी आगोश में लेना चाहती हैं। गाँव में कांग्रेसी नेता बालदेव के साथ रहने वाले यादव टोले का कालीचरन सबसे पहले सोशलिस्ट पार्टी का मेंबर बनता है और दूसरे लोगों को भी बनाता है- "रास्ते में कालीचरन बासुदेव को समझाता है, यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी। किरांतीदल का नाम नहीं सुना था?..... बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह, यह गाना नहीं सुना हो? वही पाटी है।" कांग्रेस के मेंबर बनने वालों में तहसीलदार विश्वनाथ, खेलावन यादव या फिर अलग-अलग टोले के वही लोग मेंबर बनते हैं, जिनके पास अपनी ज़मीन है। जबकि सोशलिस्ट पार्टी में भूमिहर किसान, मज़दूर और आदिवासी संथाल मेंबर बनते हैं। यही नहीं गाँव में हिंदू संगठन के लोग भी अपनी पार्टी के मेंबर बनाते हैं। हिंदू संगठन से जुड़ने वाले लोगों में राजपूत टोले के रामकिरपालसिंघ, शिवशक्करसिंघ और हरगौरी प्रमुख हैं। सिपहिया टोले के लोगों को संयोजक जी हिंदुत्व का बोध कराते हुए कहते हैं- "यवनों ने हमारे आर्यवर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिंदू संतान म्लेच्छ संस्कृति की पुजारी हो गई है। शिव जी, महाराणा प्रताप....।"[3]

इस उपन्याास में रेणु कांग्रेस की नीतियों और उनके मेंबरों पर व्यंग्य करने में बिल्कुल नहीं चूकते। जीवनभर गरीबों का खून चूसने वाले, हवा के रुख को भाँप कर कांग्रेसी हो गए। अपने आपको सच्चा गाँधीवादी दिखाने के लिए खादी पहनने लगे। तहसीलदारी छोड़कर काँग्रेसियों को अच्छा चंदा देकर विश्वनाथ कांग्रेसी हो गए- "तसीलदार साहब चवन्निया मेंबर नहीं बने हैं। चवन्निया मेंबर तो सभी बनते हैं। तसीलदार साहब चार-सौ-टकिया मेंबर बने हैं। देखा नहीं? शिवनाथबाबू ने रसीद काटकर दिया और तहसीलदार साहब तुरंत मंधाता तंबाकू के पत्ते के बराकर चार नंबरी नोट निकालकर दे दिया। खड़-खड़ करता था नोट।"[4] बेचारा बालदेव पक्का कांग्रेसी था, आन्दोलन के समय जेल भी गया, लेकिन रहा चवन्निया

मेंबर। तहसीलदार ने ठाठ से तहसीलदारी की और जब उसमें मज़ा नहीं रहा तो समय को देखते हुए कांग्रेसी हो गए। मौकापरस्त पहले भी थे और आज भी हैं। दलबदल आज के समय सबसे बड़ी राजनीतिक विशेषता है। कल जो विरोधी थे आज मेंबर बन गए। समय के साथ और हवा के रुख को पहचानकर उसी दिशा में उड़ान भरना यह उपन्यास का पक्ष । इस आधार पर उपन्यास आज से समय को भी दर्शाता है। उपन्यास में गाँधीवादी बावनदास के मुख से इस तरह रंगे सियारों के बारे में रेणु कहलवा देते हैं- "चानमल मड़वाली के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा थाय जेहल में भोलनटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे?..... दुलारचंद कापरा को जानते हो न? वही जुआ कंपनीवाला, एक नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जोगबानी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।..... भारतमाता और भी, जार-बेजार रो रही है।"[5]

1947 के बाद संपूर्ण भारत में एक राजनीतिक उथल-पुथल थी। समाजवादी दल, कांग्रेस और जनसंघ अपनी-अपनी पार्टी का प्रचार-प्रसार करने और मेंबर बनाने की होड़ में थीं। इससे पहले कोई गाँव की गरीबी, जेहालत और बीमारियों के बारे में पूँछने भी नहीं आया। गाँव की सबसे बड़ी ज़रुरत उनके लिए भोजन और दूसरी सुविधाएँ हैं न कि किसी पार्टी का झण्डा। लेकिन अब यह पार्टियाँ भोले-भाले लोगों को सब्ज़बाग दिखाने लगीं। किसी ने आत्मनिर्भर भारत का नारा दिया तो किसी ने आज़ादी को झूठा बताकर कांग्रेस पर निशाना साधा; जनसंघ ने आर्य संस्कृति की दुहाई दी और म्लेच्छ को शत्रु घोषित कर दिया। यह पहले भी था और आज भी है, बस फर्क यह है कि अब इनका स्तर और प्रभाव अधिक है। तत्कालीन भारत की स्थिति का प्रतीक मेरीगंज का भी यही हाल था। मेरीगंज तत्कालीन गाँवों के राजनीतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करता है। कांग्रेस जनता को रामराज्य का सपना दिखा रही थी, समाजवादी दल द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का पाठ पढ़ा रहे थे, जो लोगों की समझ से बाहर था। उन्हें तो केवल एक नारा ही आकर्षित कर रहा था- 'जो जोतेगा वह बोएगा और जो बोएगा वह काटेगा।' वहीं हिंदूवादी संगठन आर्यवर्त की संक्रामित होती संस्कृति का बोध कराकर कल्पित विश्वगुरु और हिंदूराष्ट्र बनाने का सबक़ पढ़ा रहे थे। जो गाँव वाले केवल जाति के आधार पर बटे थे, वह अब अर्थ, पार्टी और विचारधारा के आधार पर बट गए। लोग पहले ही मलेरिया और कालाअजार से पीड़ित थे, अब गन्दी और ओछी राजनीति की बीमारी की चपेट में आ गए।

राजनीति इंसान को किस हद तक महत्वाकांक्षी और व्यक्तिवादी बना देती है, इसका चित्रण भी रेणु ने इस उपन्यास में किया है। कांग्रेस का पहला मेंबर और गाँधीवाद को मानने वाला बालदेव ही मेरीगंज में आता है। लोगों को कांग्रेस से जोड़ता है, कालीचरन उनमें विशेष है, वह बालदेव के साथ रहता है। पूर्णिया रैली में कांग्रेसी मेंबर की हैसियत से सुबह जाता है और शाम को सोशलिस्ट होकर लौटता है। फिर बालदेव

से केवल किनारा ही नहीं करता बल्कि विरोधी हो जाता है। बालदेव को कांग्रेसी ही अलग कर देते हैं- "बालदेव को कोई खबर नहीं दी गई। कपड़े की मेंबरी भी नहीं रही। नीमक कानून के समय जेल जाने की यही बख्शीस मिला है। कालीचरन की पाटी वाले ठीक कहते हैं कांग्रेस अमीरों की पाटी है। लेकिन वह कालीचरन की पाटी में तो नहीं जा सकता। कालीचरन की आँखे उसने ही खोलीं। रात-रात-भर जागकर कालीचरन को जेहल का कितना किस्सा, गाँधी जी का किस्सा, जमाहिरलाल का किस्सा सुनाया। कालीचरन उसका चेला है। वह आखिर चेला की पार्टी में जाएगा? नहीं ऐसा नहीं हो सकता।"[6]

राजनीति का भयानक दानवीय रूप जो इंसानों की बलि माँगता है, उसका भी चित्रण रेणु ने किया। सोशलिस्ट पार्टी के नए मेंबर भूमिहीन संथाल द्वन्दात्मक भौतिकवाद का कोरा आदर्श सुनकर अपने आपको क्रांतिकारी समझने लगे। अधपके और अव्यवहारिक वर्ग-संघर्ष की अधूरी व्याख्या चवन्निया मेंबर से वर्ग-संघर्ष को जानकर गाँव में ही वर्ग-संघर्ष करने के लिए तैयार हो गए। उन्हें तो सुनकर बड़ा ही आसान और सफल होने वाला लगा। काली टोपी आर्यावर्त को शुद्ध करने और विशुद्ध हिंदू देश बनाने की पहल मेरीगंज से ही करने लगे, लेकिन गाँव में तो कोई मुसलमान नहीं, फिर किसका गला काटें? किसे शत्रु मानकर धर्मयुद्ध करें? मुसलमान नहीं तो संथाल ही सही- "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा। हिंदू राज कायम करने के लिए गाँव में ही लोहा लेना पड़ेगा।"[7] लेकिन जब सच में वर्ग-संघर्ष हो जाता है और गाँव में पुलिस आ जाती है तो लोग द्वद्वात्मक भौतिकवाद भूल गए, हिंदू राष्ट्र का नारा धूमिल पड़ गया। अब समाजवादी नेता कालीचरन और कांग्रेसी बालदेव जो कभी किसी विचारधारा के मानने वाले थे, जिनके अपने आदर्श और सिद्धांत थे, वे सब भूलकर, पार्टी और नारों को भूलकर यादव और सवर्ण बन गए। परिणाम यह हुआ कि कार्ल मार्क्स के शोषित और चिरदोही संथाल जेल पहुँच गए-"नौ संथालों के अलावा जो लोग घायल इसपिताल में पड़े हैं, वे लोग भी गिरिफ्त हैं।.....गैर संथालों में कोई गिरिफ्त नहीं हुआ।"[8] कामरेड कालीचरन जो मज़दूरों और भूमिहीन किसानों के नेता थे, अब सर्वणों के गवाह हैं। जिनकी गवाही पर वे संथाल जेल गए जिन्होंने इनसे ही वर्ग-संघर्ष की गाथा सुनी और इनके ही नेतृत्व में वर्ग-संघर्ष किया था।

वैचारिकता को तिरोहित कर दल को बदलना यह आज तो भयानक रूप से देखने को मिलता है। जो पहले कांग्रेसी थे गांधीवाद और निरपेक्षता के पैरोकार थे, 2014 के बाद सत्ता परिवर्तन होने पर सत्ताधारी दल की पहली पंक्ति में बैठे नज़र आते हैं। राजनीति में आदर्श, नैतिकता और विचारधारा को एक रात में ही स्वाहा कर देना यह लेखक ने कालीचरण और बालदेव के माध्यम से दिखाया है। उपन्यास के दोनों पात्रों को मजबूर किया गया। एक को दबाव लेकर मजबूर किया गया और दूसरे ने अपने अतर्विरोध के चलते ऐसा किया। आज भी कुछ मजबूर होकर या सरकारी तंत्र से डरकर दलबदल करते हैं, कुछ ऐसे भी हैं जो सत्ता की लपसी चाटने के लिए भी काया-परिवर्तन कर लेते हैं। सरकारी तंत्र को सत्ताधारियों द्वारा अनुचित

प्रयोग करते हुए भी रेणु ने अपने उपन्यास में दिखाया है।

वर्तमान समय में सबसे बड़ी विशेषता है कि दूसरे पर दोषारोपण करना, वह आज से नहीं पहले से ही है। राजनीति से लेकर सामाजिक मुद्दों तक में एक दूसरे पर दोषारोपण करना आम बात है। आज जनता सारा का सारा दोष नेताओं पर लगाती है। सत्ताधारी नेता विपक्ष पर दोषारोपण करती है। जनता अपना रोना-रोती है और अपनी सारी नाकामी तथा समस्या का ठीकरा नेता पर फोड़ती है। सच्ची बात तो यह है कि जनता जर्नादन भी बड़ी चालाक होती है। वज़नी और कद्दावर आदमी को हाथों-हाथ लेती है, सर पर बैठती है और हल्के आदमी को दरकिनार कर देती है। वह जय-जयकार उसकी ही करती है, जिसके पैरों के नीचे उसकी गर्दन दबी हो या फिर उससे कुछ लाभ पा जाने की आशा हो। इस प्रवृत्ति को उपन्यास में रेणु ने बालदेव के माध्यम से दर्शाया है। अंग्रेज सरकार कांग्रेसियों और खद्दरधारियों के सख्त खिलाफ है, यह मेरीगंज की जनता जानती है। गाँव में मलेटरी आने की खबर सुनकर यादव टोली के लोग सुराजी बालदेव को पकड़कर सरकारी अफसरों के सामने ले आते हैं, ताकि अपनी गर्दन बची रहे, लेकिन समय बदल गया है। यह समय आजादी के कुछ वर्ष पूर्व का है। जब अफसर उसे पहचान लेता है और उसे छुड़वा देता है, तो लोगों में संशय पैदा होता है। सरकारी अफसर अस्पताल की ज़िम्मेदारी बालदेव को देता है, तो लोगों को बालदेव की महत्ता का आभास होता है। फिर जो लोग उसे पकड़कर ले गए थे, अपना रंग बदल लेते है-"उसी दिन से खेलावनसिंघ यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं, जात का नाम जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथों में है। तुम कोई पराए हो? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होगी। हम तुम भाई-भाई ठहरे।"[9] लेकिन जब गाँव में बालदेव का कद घटना है तो यही खेलावन यादव बालदेव को घर से निकाल देते हैं।

स्वतंत्रता पूर्व लोगों ने जो सपने देखे, वह सपने साकार होते नहीं दिखे, जो कल्पनाएँ की वह धूमिल होती दिखाई पड़ी। इस मोहभंग की स्थिति का चित्रण रेणु ने उपन्यास में किया है। पहले मोहभंग का चित्रण स्वतंत्रता के जुलूस में 'यह आज़ादी झूठी है', के नारे से हुआ। उसके बाद मेरीगंज गाँव के समस्त वातावरण से परिचय मिला। मज़दूर! मज़दूर ही रहा, भूमिहीन किसान! भूमिहीन ही रहा। जो पहले ज़मीदार, मालिक या तहसीलदार बनकर लूटते थे, अब वह नेता बनकर लूटने लगे तो आज़ादी कहाँ मिली? गरीब को गरीबी से आज़ादी, शोषित को शोषण से आज़ादी कहाँ मिली? रेणु ने इस झूठी आज़ादी को तहसीलदार विश्वनाथ के मुख से व्यंग्य रूप में कहलवा दिया-"जिस दिन धनी जमीदार, सेठ और मिलवालों को राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेंगे उसी दिन, उसी दिन असल सुराज हो जाएगा।"[10]

वर्तमान समय में राजनीति से जुड़े व्यक्ति का अपराधी पृष्ठभूमि का होना आम बात हो चुकी है। परंतु आज जिस तरह के हालत है उसका आरंभ कहीं न कहीं स्वतंत्रता के आरंभिक दौर से हुआ हुआ। इस मुद्दे को भी रेणु ने बड़ी शिद्दत से उठाया। कांग्रेस की पार्टी विस्तार की नीति ने हर व्यक्ति को राजनीति

से जुड़ने का अवसर दिया। पार्टी में पद भी चंदे की रकम की हैसियत पर निर्भर करता है। इसका लाभ उठाकर अपराधिक छवि वाले लोग नेता बन गये। अब वे अपने काले-कारनामें खद्दर के पीछे से करने लगे- "कटहा के दुलारचंद कापरा, वही जुआ कंपनीवाला, जिसकी जुए की दुकान पर नेवीलाल, भोलाबाबू और बावन ने फारबिसगंज मेला में पिकेटिन किया था। जुआ भी नहीं, एकदम पाकिटकाट खेला करता था और मोरंगिया लड़कियों, मोरंगिया दारु-गाँजा का काराबार करता था।..... आज कटहा थाना का सिकरेटरी है।"[11]

इस उपन्यास की सबसे बड़ी बात है कि इसमें लेखक का अपना राजनैतिक दर्शन दिखाई नहीं पड़ता है। मार्क्सवाद या समाजवाद को ज़बरदस्ती ठूसने का प्रयास नहीं किया। जितना भी इसमें राजनीतिक दर्शन दिखाया गया है वह स्वाभाविक है। जहाँ उन्होंनें कांग्रेसी अहिंसा का मज़ाक उड़ाया तो सोशलिस्टों के कारनामों को भी पाठकों के सामने रखा। यही कारण है कि उपन्यास में कहीं पर भी ऐसा नहीं लगता है कि इसमें किसी घटना या प्रसंग को लेखक ने अपने स्वभाव के अनुसार घुमाया हो। इस विषय में प्रोफ़ेसर प्रदीप सक्सेना का कथन है-" रेणु अत्यन्त योग्यताए सतर्कता और दृष्टिपूर्वक 'मैला आँचल' में राजनीति का चित्रण और उपयोग, राष्ट्रीय राजनीति के मुख्य स्रोत काँग्रेस और उसके केन्द्रीय पक्ष गाँधीवादी संघर्ष का करते हैं। बिना किसी आग्रह के जो यर्थाथ है उसे विचारधारा से डिस्टार्ट नहीं करते बल्कि यर्थाथ को उसके अन्तर्विरोध के आस-पास दर्शाते हैं।"[12] पूरे उपन्यास में कोई नाटकीयता नहीं है, कथा स्वाभाविक अपने अन्तराल और प्रवाह के साथ देश-दुनिया और समाज के मुद्दों को लेकर चलती है।

अंत में मैं यही कहूँगा कि 'मैला आँचल' बहुआयामी रचना है जिसे सुधी पाठक और आलोचक अपने दृष्टिकोण से देखते आ रहे हैं। साथ ही अलग-अलग पक्षों को लेकर शोधकार्य भी हो रहा है। यह अवश्य कह सकता हूँ कि यह हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। यह कहने वाला कोई मैं पहला व्यक्ति नहीं हूँए बल्कि बहुतों ने ऐसा कहा। मैला आँचल के पहले समीक्षक नलिन विलोचन शर्मा ने इसे हिंदी के श्रेष्ठ दस उपन्यासों में जगह दी।

संदर्भ सूचीः

1. आधुनिक हिंदी उपन्यास भाग 1 - संपादक भीष्म सहानी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, दूसरा संस्करण पृ0 461
2. रेणु रचनावली भाग 2 - संपादक भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण चौथा पृ0 97
3. वही पृ0 127
4. वही पृ0 128
5. वही पृ0 136

6. वही पृ0 156
7. वही पृ0 176
8. वही पृ0 201
9. वही पृ0 30
10. वही पृ0 273
11. वही पृ0 291
12. मैला आँचल का महत्व - संपादक मधुरेश, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद संस्करण 2015 पृ0 111